>

Title: Regarding commercialization of health services and exodus of doctors from AIIMS.

श्री निशिकांत दुबे (गोड्डा): अध्यक्ष महोदया, आज मैं आपके माध्यम से आल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, जो कि आज भी भारत का गौरव है और हमारे जैसे लोग जो झारखण्ड, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश से आते हैं, जो गरीबों के इलाज का एक संस्थान है, से लगातार डाक्टर्स का पलायन हो रहा है। लगातार न्यूज़ पढ़ने को मिलती है कि बिना किसी कारण के आज यह डाक्टर चला गया और उसका कारण यह है कि डाक्टरों को लगता है कि जिस माहौल के कारण यह आल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बना, गरीबों का जिस तरह से यहां इलाज होना था और हमारे जैसे सांसद जिसके लिए जूझते रहते हैं, उनको वह सुविधा नहीं मिल पाती है। जो कारण वे बताते हैं कि यदि हम किसी का आपरेशन करना चाहते हैं, तो आपरेशन की सुविधा नहीं है। यदि ओपीडी करना चाहते हैं, तो उसकी सुविधा नहीं है। उसका कारण यह है कि 50 के दशक में जब यह आल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बना, उस वक्त जो सुविधाएं थी, वे सुविधाएं 33 करोड़ लोगों के लिए थीं, 40 करोड़ लोगों के लिए थीं, आज 120 करोड़ लोगों के लिए वे सुविधाएं कम पड़ रही हैं। यदि दिल्ली के अंदर ही देखेंगे, जो प्राइवेट हॉस्पिटल्स हैं, उसने मान लीजिए एक बड़ा हॉस्पिटल बना लिया है, लेकिन अलग-अलग जगहों पर उन्होंने अपने सेन्टर बना लिए हैं, जहां पर ओपीडी होती है, छोटी-मोटी बीमारियों के इलाज होते हैं, जहां महिलाओं की डिलीवरी होती है। लेकिन पिछले पांच-छः साल में केन्द्र सरकार की जो नीति रही है और जिस तरह डाक्टरों के साथ उन्होंने मिसबिहेव किया है, जिस तरह से उनको सुविधाएं नहीं दे रहे हैं, जिस तरह से हमारे जैसे लोग दुखी हो रहे हैं, मैं केन्द्र सरकार से आपके माध्यम से मांग करूंगा कि जिस तरह प्राइवेट हॉस्पिटल्स जैसे अपोलो, मैक्स आदि ने दिल्ली के अंदर अपने अलग-अलग केंद्र बना लिए हैं, आप भी वैसे केन्द्र बनाएं या अलग-अलग जगहों पर छः एम्स खोल रहे हैं, उसी तरह से हमारे यहां झारखण्ड में, उत्तर प्रदेश में डिमाण्ड है, वहां भी खोलने चाहिए। मैं लगातार यह बात उठाते रहा हूं कि संथाल परगना, जहां से मैं आता हूं, वहां कनकटा जैसा एक गांव है, जहां पूरे गांव में विकलांग ही पैदा होते हैं। संथाल परगना जैसे एरिया में, हसडीहा में एम्स जैसे इंस्टीट्यूट बनें, उत्तर प्रदेश में एम्स जैसे इंस्टीट्यूट बनें, डाक्टर्स के साथ न्याय हो और आल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, जो डाक्टर्स के लिए, रोगी के लिए, आम लोगों के लिए बना था, उसके लिए जितनी सुविधाएं हैं, वे दी जाएं और इसके विकास के लिए सरकार प्रयत्न करे। मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान इसकी तरफ आकर्षित करना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदया :

डॉ. किरीट प्रेमजीभाई सोलंकी,

श्री धनंजय सिंह,

श्री राकेश पाण्डेय,

श्री वीरेन्द्र कुमार,

श्री राजेन्द्र अग्रवाल,

श्री अर्जुन राम मेघवाल स्वयं को श्री निशिकांत दुबे जी द्वारा उठाए गए विषय के साथ सम्बद्ध करते हैं।

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): महोदया, मैं क्या मैं आपकी अनुमति से यहां से बोल सकता हूं?

अध्यक्ष महोदया : नहीं, आप अपनी जगह पर जाइए।